विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत विषयशिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: 22-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी. पर आधारित)

- **श्लोक7** .

प्रस्तरतले लतातरुगुल्मा धो भवन्तु पिष्टा:।
पाषाणी सभ्यता निसर्गे स्यान्न समाविष्टा ।।
मानवाय जीवनं कामये नो जीवन्मरणम् ।शुचि....।।

- शब्दार्थ

प्रस्तरतले –पत्थर के नीचे ,पिष्टा:- पिसी हुई

लतातरुगुल्मा: - बेलें,पेड़ और झाड़ियाँ ,स्यात् -हो

पाषाणी सभ्यता –पत्थरों वाली सभ्यता,निसर्गे -प्रकृति में /

संसार में ,समाविष्टा –मिली(सम्मिलित) ,कामये -करता हूँ,

जीवन्मरणम् -जीवन की समाप्ति

- अर्थ

पत्थर के तल (नीचे) पर लताएँ,पेड़ और झाड़ियाँ पिसे नहीं। प्रकृति में पथरीली सभ्यता समाविष्ट (सम्मिलित) न हो। मैं मनुष्य के जीवन की कामना करता हूं ,जीवित मृत्यु की नहीं ।इसलिए शुद्ध पर्यावरण ही हमारी शरण है।